International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(5): 87-89

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(5): 87-89
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-07-2019
Accepted: 26-08-2019

कशिश आर्य

शोधछात्र, संस्कृत विभाग,

दिल्ली विश्वविद्यलय, भारत ।

Correspondence
कशिश आर्य

शोधछात्र, संस्कृत विभाग,

दिल्ली विश्वविद्यलय, भारत ।

साहित्यबिन्दु में काव्य-भेद निरूपण: एक अध्ययन

कशिश आर्य

प्रस्तावना

संसार की किसी भी भाषा का निर्माण एवं प्रयोग सामान्य व्यवहार से लेकर हृदयस्थ गहनतम विचारों की अभिव्यक्ति के लिए होता है। इन्हीं विचारों की विशेष अर्थात आनंदमयी अभिव्यक्ति के लिए कविता रूपी कामिनी का अवलंबन किया जाता है, जो भाषिक भावाभिव्यक्ति में उत्कृष्टता को उत्पन्न कर देती है। भाषा में स्थित अगणित शब्दों एवं अर्थों में से कभी-कभी (परिस्थिति-विशेष) में कुछ शब्द एवं अर्थ विशेष ही हृदयस्थ भावों की आनंदमयी अभिव्यक्ति का हेतु बनते हैं। इसी भाव को आनंदवर्धन ने भी विशेष रूप से अभिव्यक्त किया है। [1] अतः उत्कृष्ट काव्य की रचना के लिए उस शब्दार्थ विशेष के साहित्य का आश्रयण श्रेयस्कर एवं अपरिहार्य है।

काव्य शरीर में आत्मस्थानीय तत्व के विषय में भी विविध आचार्यों में मतभेद रहे हैं, जिसके फलस्वरूप ही षट्संप्रदाय का मुख्य रूप से आविर्भाव हुआ। इनमें रस एवं अलंकारवादी आचार्यों के समान ही ध्वनिवादी आचार्यों की भी विस्तृत परंपरा रही है जो अद्यपर्यंत दृष्टिगोचर होती है। उसी परंपरा के आधुनिक आचार्य छज्जूराम शास्त्री भी शब्दार्थ युगल की काव्यता को स्वीकार करते हैं तथा उसके विशेषण स्वरूप अलौकिक आह्लाद की जनिका रम्यता=रमणीयता को उपस्थापित करते हैं। [2] काव्य में इसी रमणीयता के कारणस्वरूप आत्मस्थानीय तत्वों का विवेचन (रसादि का भेदोपभेद सहित स्वरूप-निरूपण) वे साहित्यबिंदु नामक ग्रंथ के द्वितीय बिंदु में करते हैं। रस आदि तत्वों के विवेचन से पूर्व आचार्य छज्जूराम मम्मट की शैली [3] का अनुसरण करते हुए काव्य के धर्मों का निरूपण करने से पूर्व काव्यरूप धर्मी का सभेद निरूपण करते हैं। इस संदर्भ में काव्य के लक्षण, फल, हेतु एवं निर्माण-समय का विवेचन करके व्यंग्य के प्राधान्याप्राधान्य के आधार पर काव्य के तीन स्तरात्मक भेदों के सोदाहरण लक्षण प्रस्तुत करते हैं एवं संबद्ध वृत्तियों के माध्यम से ध्वनि रूप काव्य की ही उत्तमता को स्वीकार करते हैं।

साहित्यबिन्दु की उत्तम काव्य विवेचना

आचार्य ध्वनि को उत्तम काव्य का पर्याय मानते हुए ध्वन्यालोककार की ध्वनि स्वरूप विवेचन संबंधी कारिका [4] को आधार बनाते हैं। वे कहते हैं कि जहां शब्द एवं अर्थ दोनों ही गौणभाव पर उपाश्रित होकर किसी विशेष (चमत्कारसारभूत) अर्थ की अभिव्यंजना करते हैं,

वहां ध्वनि रूप उत्तम काव्य होता है। [5] इसी अभिप्राय को वृत्ति में अधिक स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि लक्षण में प्रयुक्त 'कमप्यर्थम्' पद से तात्पर्य चमत्कारजनक व्यंग्यार्थ है क्योंकि ध्वन्यमान अर्थ का सार एवं तात्पर्य चमत्कार में ही है। 'ध्वन्यतेस्मिन्निति ध्वनिः' व्युत्पत्ति के आधार पर जब ध्वनि में अधिकरणार्थक प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है, तब वह उत्तम काव्य का वाचक होता है। वे यह भी बताते हैं कि ध्वनि, रमणीय अलंकारों (आक्षेप, समासोक्ति आदि) का विषय नहीं है क्योंकि वाच्यवाचक रूप अलंकारों में व्यंग्यव्यंजक रूप ध्वनि का अंतर्भाव नहीं किया जा सकता। ध्वनि काव्य ही लोक (सहृदय समाज) में समादृत है। वह किसी प्राचीन इतिवृत्त का निबन्धन मात्र नहीं हो सकता क्योंकि वह सभी वाच्यवाचक रूप प्रपंच, पुराणादि से ही पूर्वसिद्ध है तथा महाकवित्व पद की प्राप्ति कराने में असमर्थ है।

उत्तम काव्य के प्रसंग में आचार्य छज्जूराम शास्त्री, व्यंग्य के जगन्नाथाभिमत प्राधान्याप्राधान्य पर आधृत ध्वनि के दो भेदों का भी खण्डन करते हैं। इसका कारण बतलाते हुए वह कहते हैं कि ध्वनि की संकल्पना व्यंग्य के प्रधान रूप में स्थित होने पर ही अंगीकरणीय है। इस प्रकार विविध तर्कों के आधार पर तथा प्राचीन अवधारणाओं के आलोक में बिन्दुकार ने ध्वनि के प्राधान्य के स्थल पर ही उत्तम काव्यता स्वीकार की है।

छज्जूराम कृत मध्यम-काव्य-निरूपण की समीक्षा

उत्तम, ध्वनि रूप काव्य का निरूपण करने के पश्चात आचार्य छज्जूराम व्यंग्य की अप्रधानता के स्थल पर होने वाले काव्य विशेष (मध्यम काव्य) का लक्षण प्रस्तुत करते हैं [6], जो मम्मट, विश्वनाथ आदि ध्वनिकारों के लक्षणों [7] से ही प्रभावित है। पुनरपि लक्षण एवं संबद्ध वृत्ति के वैशिष्ट्य को जानने हेतु उसका समालोचन आवश्यक है। लक्षण के अनुसार-जिस काव्य में व्यंग्यार्थ की अपेक्षा वाच्यार्थ अधिक चमत्कारी हो, वह मध्यम श्रेणी का काव्य गुणीभूतव्यङ्ग्य नामक काव्य कहलाता है। बिन्दुकार प्रदत्त लक्षण यद्यपि मम्मटाभिमत ही है परंतु लक्षण की वृत्ति में वे ध्वनिकार के मत को स्वलक्षण की पुष्टि हेतु उद्धृत करते हैं। इस विषय में यह ध्यातव्य है कि ध्वनिकारोक्त गुणीभूतव्यङ्ग्य नामक काव्य-भेद के स्वरूप निर्धारण के विषय में केवल वाच्य का व्यंग्य की अपेक्षा चमत्कारी होना ही पर्याप्त नहीं है अपितु उनके मत में व्यंग्य का अन्वय होने पर वाच्य के चारुत्व में प्रकर्ष होना ही उक्त प्रकारक काव्य की कोटि में आता है। स्वतंत्र रूप से (व्यंग्यान्वय से रहित) होने पर वाच्य का चमत्कारित्व ध्वनिकार को गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य के स्थलों पर स्पृहणीय नहीं है। परंतु मम्मट आदि ने ऐसे स्थलों को भी गुणीभूतव्यङ्ग्य-काव्य में स्थान दिया है। उदाहरणार्थ-असुंदरव्यंग्य नामक गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य।

इसके पश्चात बिन्दुकार ने पुनः ध्वनिकार की कारिका [8] के उद्धरण के माध्यम से यह बतलाया है कि जहां वस्तु, अलंकार, रसादि रूप व्यङ्ग्य प्रधान रस के स्थल पर गौण हो जाएं, वह गुणीभूतव्यङ्ग्य का स्थल भी ध्वनि की पर्यालोचना अर्थात ध्वनि में विश्रान्ति के कारण उत्तम काव्य हो जाता है। गुणीभूतव्यङ्ग्य-काव्य के भेदों के सम्बन्ध में बिन्दुकार की मम्मटादि से सहमति दिखलाई देती है। वे यह भी बतलाते हैं कि यद्यपि भामहादि प्राचीन आचार्यों ने शब्दशः ध्वनि का उल्लेख नहीं किया है परन्तु समासोक्त्यादि अलंकारों के निरूपण के संदर्भ में उसपर दृष्टिपात अवश्य किया है, अतः यह नहीं कहा जा सकता कि उनकी दृष्टि से यह तत्त्व पूर्णतः ओझल था।

साहित्यबिन्दु का चित्र-काव्य निरूपण

मध्यम काव्य के वर्णन के उपरांत आचार्य छज्जूराम, मम्मट के चित्र-काव्य संबंधी लक्षण [9] को ही स्व शब्दावली में प्रस्तुत करते हैं। [10] इससे यह स्पष्ट होता है कि छज्जूराम, विश्वनाथ के चित्र-काव्य-खंडन संबंधी मत को निरस्त करते हैं एवं ग्रन्थाभिधेय 'काव्य' के तीन भेद मानते हैं और इस विषय में भी आनंदवर्धन व मम्मट आदि का अनुसरण करते हैं। चित्र-काव्य का लक्षण प्रस्तुत करते हुए आचार्य कहते हैं कि जिस काव्य में शब्द एवं अर्थ का चमत्कार परस्पर (एक-दूसरे की अपेक्षा) प्रधान रहता है, वहां शब्द अथवा अर्थ की प्रधानता के कारण शब्द-चित्र अथवा अर्थ-चित्र भेद वाला अधम काव्य होता है अर्थात जहां शब्द की अपेक्षा अर्थ का अथवा अर्थ की अपेक्षा शब्द का चमत्कार अधिक होता है, वह दो प्रकार का चमत्कृति का हेतु व्यङ्ग्यरहित काव्य अधम काव्य है। यहां विशेषतः ध्यातव्य यह है कि चित्र-काव्य का लक्षण प्रस्तुत करते हुए आचार्य परंपरा से प्रयुक्त होते आए चमत्कार शब्द के (काव्य का सारतत्त्व रूप, रमणीयता का अपर पर्याय, सहृदयाह्लादक तत्त्व) अर्थ को ग्रहण न करके शब्दाडम्बर रूप (शब्द-अर्थ का प्रधानत्व मात्र) ही ग्रहण किया है। जबकि स्वयं आचार्य कई स्थलों पर चमत्कार पद को परंपरया प्रयुक्त रमणीय अर्थ में प्रयुक्त कर चुके हैं। [11] इसके पश्चात आचार्य सोदाहरण चित्रकाव्य संबंधी विवेचना प्रस्तुत करते हैं। इस प्रसङ में भी स्वनिर्मित उदाहरणों को अधिकाधिक प्रस्तुत करने की प्रतिज्ञा का आचार्य ने सम्यक् परिपालन किया है। ध्वन्यालोककार को उद्धृत करके [12] वे इस बात का भी समर्थन करते हैं कि प्राथमिक अभ्यासार्थियोंके लिए चित्र काव्य की रचना द्वारा अभ्यास किया जाना श्रेयस्कर है।

उपसंहार

छज्जूराम का काव्य-भेद निरूपण यद्यपि परंपरागत तथा ध्वनिकार आदि प्राचीन आचार्यों की भावना पर ही

आधारित है। पुनरपि, नवीन उदाहरणों तथा काव्य के भेदों के लक्षणों व संबद्ध वृत्तियों में आचार्य ने खंडन-मंडन संबंधी नवीन तर्कों का समावेश करके ध्वनि परंपरा का परिपोषण अवश्य किया है। मध्यम काव्य के प्रसंग में मम्मट एवं आनंदवर्धन के लक्षणों का जो परिपोष्य-परिपोषक भाव दिखलाने का प्रयत्न किया गया है, वह तथ्यात्मक रूप से सफल नहीं रहा है। ध्वनि काव्य को ही उत्तम काव्य मान लेने के संबंध में आचार्य छज्जूराम ने ध्वनि की परिभाषा को ही यथावत् ग्रहण कर लिया है। उसी को 'तत्काव्यं ध्वनिरुत्तमम्' कहकर दोनों में अभेद स्थापना की है। चित्र काव्य के प्रसंग में भी दर्पणकार की मान्यता को खंडित कर के चित्र काव्य की सत्ता को स्वीकार किया है। जिससे छज्जूराम की व्यापक दृष्टि का बोध होता है। अतः छज्जूराम कृत काव्य-भेद-निरूपण उपर्युक्त कारणों से महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ मौलिक भी है।

संधर्व

1. सोऽर्थस्तद् व्यक्तिसामर्थ्ययोगी शब्दश्च कश्चन।
   यत्नतः प्रत्यभिज्ञेयौ तौ शब्दार्थौ महाकवेः। ध्व० १/८
2. रम्यं शब्दार्थयुगलं काव्यमस्माभिरिष्यते।
   रम्यताऽलौकिकाह्लादजनिका तत्र मन्यताम्। सा०बि० १/५
3. का०प्र० चतुर्थ उल्लास की अवतरणिका
4. यत्रार्थः शब्दो वा तमर्थमुपसर्जनीकृतस्वार्थौ।
   व्यङ्क्तः काव्यविशेषः स ध्वनिरिति सूरिभिः कथितः॥ ध्व० १/१३
5. यत्र शब्दस्तथैवार्थो गौणभावमुपाश्रितौ।
   कमप्यर्थमभिव्यङ्क्तस्तत्काव्यं ध्वनिरुत्तमम्। सा०बि० १/११ एवं वृत्ति
6. यत्र वाच्यचमत्कारो व्यङ्ग्यार्थापेक्षया पुनः।
   तद्वदन्ति गुणीभूतव्यङ्ग्यं काव्यन्तु मध्ययम्। सा०बि० १/१२
7. अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्।का०प्र०, सूत्र ३
   अपरं तु गुणीभूतव्यङ्ग्यं वाच्यादनुत्तमे व्यङ्ग्ये।सा०द० ४/१३
8. प्रकारोऽयं गुणीभूतव्यङ्ग्योऽपि ध्वनिरूपताम्।
   धत्ते रसादितात्पर्यपर्यालोचनया पुनः॥ सा०बि० १/१२ की वृत्ति में
9. शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्। का०प्र०,सूत्र ४
10. शब्दार्थयोः चमत्कारः परस्परमपेक्षया।
    प्रधानं यत्र तज्ज्ञेयमधमं चित्रसंज्ञकम्॥ सा०बि० १/१३
11. सा०बि० १/५ तथा १/१२ की वृत्ति।
12. प्रधानगुणभावाभ्यां व्यङ्ग्यस्यैवं व्यवस्थिते।
    उभे काव्ये ततोऽन्यद्यत् तच्चित्रमभिधीयते॥ सा०बि० १/१३ की वृत्ति